तीसरा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों !! आज के बाल संस्कार केंद्र का विषय है तुलसी पूजन दिवस । प्रतिवर्ष 25 दिसम्बर को तुलसी पूजन दिवस की शुरुआत देशवासियों का घोर नैतिक पतन से बचाने के लिए 2014 में पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने की थी । धीरे-धीरे यह भारत भर और विश्व के कई देशों में व्यापक रूप से मनाया जाने लगा ।

आज की कहानी में हम ब्रह्मवैवर्त पुराण की कथा सुनेंगे जिसमें हम जानेंगे कि तुलसी वास्तव में कौन थी और धरती पर उनका कैसे आगमन हुआ ? भारत में परम पावनी गण्डकी नदी का प्राकट्य कैसे हुआ? भगवान शिव को त्रिशूल कैसे प्राप्त हुआ ? आदि सभी प्रश्नों के उत्तर इस कहानी की कड़ियों में आपको मिलेंगे ।

संस्कृति सुवास में हम जानेंगे कि पूज्य बापूजी द्वारा प्रेरित तुलसी पूजन दिवस का क्या महत्व है? फिर हम

जानेंगे कि तुलसी विशेष, 'क्या करें क्या नहीं' में । इसके अलावा हम करेंगे एक पुण्य प्रदायक गतिविधि, ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञानं प्रतियोगिता प्रश्न, भजन और अंत मे सुनेंगे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग ।

तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

अब सभी बच्चे अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर पंजों के बल उछलकूद करेंगे, जिससे शरीर और मस्तिस्क मे रक्त का अनुकूल प्रवाह बढ़ेगा और चुस्ती-फुर्ती मे मदद मिलेगी ।

बच्चों, अब सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर बेठ जाएंगे, कमर सीधी, ज्ञान मुद्रा में 'हरि ॐ' का गुंजन करेंगे।

अब सभी अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे और हाथ जोड़कर पूज्य सद्गुरुदेव की प्रार्थना करेंगे -

https://youtu.be/7yMWmhcJXRI

ॐ गं गणपतये नमः,

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

अब हम सभी बच्चे भगवती सरस्वती की वंदना करेंगे - (लिंक :- https://youtu.be/DySzqHwNCxU)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI

3. आओ सुनें कहानी

तुलसी की उत्पत्ति

गोलोक परंब्रह्म भगवान श्री कृष्ण का निवास स्थान है। गोलोक धाम सनातन है, इसी लोक को वृन्दावन,साकेत, वैकुंठ परमधाम कहा जाता है। इस लोक में भगवान कृष्ण राधाजी और अपने प्रिय गोप-गोपियों के साथ सदा निवास करते हैं।

गोलोक में भगवान श्री कृष्ण की एक प्रिय गोपी थी उसका नाम था तुलसी । एक समय वह भगवान श्रीकृष्ण के साथ हास-विलास कर रही थी । इतने में ही वहाँ राधाजी आ गई

। परन्तु वह गोपी भगवान श्री कृष्ण के साथ हास-विलास में इतनी तन्मय हो गई थी कि उसने राधाजी को देखा ही नहीं । इस कारण भगवती राधाजी क्रोधित हो गयीं और कहा - अरी गोपी, तुम गोलोक की मर्यादा भूल गई ! जाओ, तुम्हें मेरा श्राप है कि तुम मनुष्य योनि में जन्म लोगी और एक असुर के साथ तुम्हारा विवाह होगा ।"

फिर भगवान श्री कृष्ण ने गोपी तुलसी से कहा - "देवी, तुम मेरे प्रेम में इतनी तल्लीन थी कि तुम राधाजी को देख नहीं पाई और राधाजी ने इसे अपना अपमान समझा । परन्तु मेरे प्रेमी भक्त का कभी नाश नहीं होता, यह श्राप तुम्हारे लिए वरदान बन जायेगा । जिस असुर के साथ तुम्हारा विवाह होगा वह असुर भी मेरा ही अंश होगा । तुम अपना श्राप पूरा करके कुछ क्षणों में पुनः गोलोक आ जाओगी क्योंकि समय धारा के अनुसार गोलोक के कुछ क्षणों में मनुष्य लोक में सदियाँ गुजर जाती है । तुम मनुष्य जन्म पाकर तप करना और ब्रह्मा जी से मेरी प्राप्ति का वर मांगना । अब तुम जाओ, तुम्हारा कल्याण हो । "

गोपी तुलसी ने भगवान श्री कृष्ण को प्रणाम किया । इतने में ही श्राप के प्रभाव के कारण गोलोक से उसका पतन हो गया । उसी समय भारत वर्ष के राजा धर्मध्वज की पत्नी ने गर्भ धारण किया । जब गर्भ परिपक्व हुआ, तब कार्तिक मास

की पूर्णिमा के दिन शुभ संयोंग में बहुत ही सुन्दर, सुकोमल और तेजस्वी कन्या का जन्म हुआ । इस कन्या के विलक्षण लक्षण थे, मुख पर चन्द्रमा के समान तेज था, ये वही गोपी थी जिसका श्राप के कारण मनुष्य जन्म हुआ । जानकार विद्वानों के गृह कुंडली के आधार पर इसका नाम भी तुलसी ही रखा ।

जब वह कन्या 16 वर्ष कि हुई तब उसने राज-वैभव का त्याग कर दिया और एकांत वन में जाकर तप करने लगी । उसे अपना पूर्व जन्म भी स्मरण था । वह कई वर्षो तक कठोर तप करती रही । तब उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी वहां उसके समक्ष प्रकट हुए और बोले- देवी मैं तुम पर प्रसन्न हूं, तुम्हारी जो इच्छा हो वह वरदान देने के लिए तैयार हूं।।।

तुलसी - हे पितामह आपको नमस्कार हो ! मुझे शांत स्वरूप भगवान नारायण अपने प्रियतम पति के रूप में प्राप्त हो । आप मेरी अभिलाषा पूर्ण करने की कृपा करें ।

ब्रह्मा जी - देवी, राधाजी के श्राप के कारण इस जन्म में तुम्हारा विवाह एक असूर के साथ होगा परंतु वह असुर पूर्व जन्म में भगवान श्री कृष्ण के अंश से प्रकट हुआ गोप था । उसे भी किसी श्राप के कारण ही असुर योनि प्राप्त हुई है । उसका नाम शंखचूड़ है । वह इतना वीर और प्रतापी है कि उसने तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर रखी है । इतना दानवीर है कि उसके द्वार से कोई याचक खाली नहीं जाता । तुम उसे पति

रूप में स्वीकार कर लो । फिर जब तुम दोनों का मनुष्य जीवन पूरा हो जाएगा तब तुम्हें साक्षात भगवान नारायण पति रूप में प्राप्त होंगे और तुम उनके प्राणों से भी अधिक प्रिया स्वरूपा होवोगी । मेरी प्रेरणा से शंखचूड़ इसी तरफ आ रहा है और मेरी उपस्थिति में तुम दोनों का गन्धर्व विवाह संपन्न होगा ।

इतने में महा प्रतापी असुर शंखचूड़ वहां उपस्थित हो गया।। उसने ब्रह्मदेव को प्रणाम किया ।

तब ब्रह्मा जी ने कहा - शंखचूड़ तुम पुरुषों में रत्न हो और यह साध्वी देवी कन्याओं में रत्न है । तुम इसे अपनी भार्या के रूप में स्वीकार करो । फिर ब्रह्मा जी ने देवी तुलसी की तरफ देखते हुए कहा हे- देवी तुलसी, तुम शंखचूड़ की सौभाग्यवती प्रिया बन जाओ, इसमें भगवान श्री कृष्ण का ही अंश है और सदा पतिवर्ता धर्म का पालन करना । फिर ब्रह्मा जी की उपस्थिति में शंखचूड़ ने देवी तुलसी का पाणीग्रहण किया और पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया । फिर ब्रह्मा जी दोनों को आशीर्वाद देते हुए वहां से अंतरध्यान हो गए ।

शंखचूड़ और देवी तुलसी राज भवन में आनंदपूर्वक जीवन बिताने लगे ।

वीर प्रतापी शंखचूड़ ने दीर्घकाल तक तीनों लोकों पर शासन किया । इस कारण देवताओं की स्थिति भिक्षुक जैसी हो गई थी । सभी देवता उदास होकर ब्रह्मा जी की सभा में गए

और विलाप करने लगे । तब विधाता ब्रह्मा जी देवताओं को साथ लेकर भगवान शंकर के पास गए और वहां भगवान शिव से सारी बातें कह सुनाइ । फिर भगवान शिव जी ब्रह्मा जी और सभी देवताओं को साथ लेकर वैकुंठ लोक में भगवान नारायण के पास गए और निवेदन किया - प्रभु, इतने वर्षों से सभी देवता स्वर्ग से हारे हुए इधर-उधर भटक रहे हैं, उनकी स्थिति बड़ी दयनीय हो गई है, सभी देवता आपकी शरण में है । इनका उद्धार कीजिये ।

भगवान नारायण - देवताओं शंखचूड़ को पराजित करना सरल नहीं है । क्योंकि एक तो वह मेरे अंशतेज से उत्पन्न हुआ है । दूसरा उसने पूर्व में मेरी कठोर उपासना की थी जिससे उसे अभेद कवच प्राप्त हुआ है, जिस कारण सभी प्रकार के शस्त्रों से उसकी रक्षा होती है, तीसरा उसकी पत्नी तुलसी बहुत ही पतिव्रता है, उसी के प्रभाव से वह अजय है । परंतु अब शीघ्र ही उसके उद्धार का समय आने वाला है ।”

तब भगवान नारायण ने अपने तेज से एक त्रिशूल प्रकट किया और उसे भगवान शिव को भेंट करते हुए कहा - हे महादेव, इसी त्रिशूल से आप शंखचूड़ का वध करेंगे। “

इस प्रकार तभी से भगवान शिव को त्रिशूल प्राप्त हुआ जो उनका प्रमुख शस्त्र बना ।

फिर भगवान नारायण सभी देवताओं को सम्भोधित ने कहा - हे देवताओं, तुम सभी भगवान शंकर की अगवानी में शंखचूड़ से युद्ध की तैयारी करो । बाकी मैं सभाल लूँगा ।"

तब भगवान शंकर ने अपने एक दूत को शंखचूड़ के पास भेजा । दूत शंखचूड़ के दरबार में गया और कहा - हे महाप्रतापी शंखचूड़, मेरा नाम पुष्पदंत है, मैं भगवान शंकर का दूत हूं । उन्होंने संदेश भेजा है वह सुनिए- आपने बहुत समय तक देवताओं को स्वर्ग से वंचित करके उनका राज्य भोग लिया है । अब आप देवताओं को उनका राज्य और अधिकार वापस लौटा दे, क्योंकि वे श्री हरि की शरण में गए थे और उन प्रभु ने अपना दिव्य त्रिशूल आपके विनाश के लिए भगवान शंकर को भेंट किया है । भगवान शिव इस समय नदी के तट पर वृक्ष के नीचे विराजमान है । या तो आप देवताओं का राज्य लौटा दें या उनसे युद्ध के लिए तैयार हो जाएं । बताइए, आपका क्या निर्णय है?

पुष्पदंत की वह बात सुनकर शंखचूड़ विचार करते हुए बोला- अभी तुम जाओ, मैं कल प्रातः भगवान शिव के दर्शन करने स्वयं वहां आऊंगा और उनसे इस विषय पर बातचीत करूंगा ।

पुष्पदंत राजा को प्रणाम करके वहां से चला जाता है । फिर राजा शंखचूड़ अपनी प्रिय पत्नी तुलसी के पास जाता

है और कहता है - हे देवी, मुझे यह समाचार प्राप्त हुआ कि भगवान नारायण ने भगवान शिव को मेरा वध करने के लिए एक दिव्य त्रिशूल भेंट किया है । सभी देवता मिलकर हमसे युद्ध की तेयारी कर रहे है । मेरा प्रयोजन भी युद्ध का ही है । क्यों कि इससे या तो मैं युद्ध में मारा जाऊंगा, इससे हम दोनों का उद्धार हो जाएगा और हम वापस गोलोक में भगवान श्री कृष्ण के धाम में जाएंगे अथवा तो युद्ध में जीत कर तीनों लोगों का राज्य प्राप्त होगा । इस विषय में तुम्हारी क्या राय है?

तुलसी बोली - स्वामी, जब तक आपके शरीर पर भगवन नारायण का यह कवच है और जब तक मेरा पतिव्रता धर्म है, तब तक कोई भी शस्त्र आपका विनाश नहीं कर सकेगा, आप निश्चिंत होकर युद्ध कीजिए ।

फिर दोनों ने निश्चिंत होकर रात्रि में विश्राम किया और प्रभात काल प्रतिदिन की भांति शंखचूड़ ने कई ब्राह्मण, याचकों और भिक्षुओं को मनचाही दान-दक्षिणा दी । फिर उसने धनुष बाण और शस्त्र संभाले और अपनी एक विशाल दानव सेना तैयार की । फिर स्वयं अपने विशेष मंत्रियों के साथ विमान पर बेठ कर उस स्थान पर गया जहाँ भगवान शिव नदी के किनारे वृक्ष के नीचे विराजमान थे । उनके पास दिव्य त्रिशूल जगमगा रहा था । उस समय वहां स्वामीकार्तिकेय, नंदीश्वर, और शिव के कुछ गण भी उपस्थित थे । शंखचूड़ ने विमान से

उतर कर सबका अभिवादन किया । फिर भगवान शिव के समीप बैठकर उन्हें प्रणाम किया ।

तब महादेव जी कहने लगे - शंखचूड़, तुम पूर्व काल में भगवान श्री कृष्ण के पार्षद थे । तुम्हें किसी श्राप के कारण यह दानव योनि में मिली है । तुमने अपने बल और पराक्रम से तीनों लोकों पर विजय प्राप्त की है । परंतु समय सदा एकसा नहीं रहता है । मेरे कहने का अभिप्राय है कि अब तुम देवताओं को उनका राज्य लौटा दो अथवा मेरे साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो जाओ ।

शंखचूड़ - भगवन, मैं युद्ध को उचित समझता हूं, आप मुझे अपने साथ युद्ध करने की अनुमति प्रदान करें ।

भगवान शिव ने सहमति का संकेत दिया ।

तब शंखचूड़ अपने मंत्रियों सहित विमान में बैठकर अपनी सेना के पास गया और तेज स्वर में ढोल और धुनधुबियाँ बजाकर युद्ध का आवाहन किया ।

एक तरफ दानवों की कई अक्शोनी विशाल सेना और दूसरी तरफ भगवान शिव के समस्त गण सभी देवताओं सेना, दोनों के बीच घमासान संग्राम शुरू हो गया । पूरा आसमान तीर और बाणों से ढक गया।

युद्ध कई महीनो तक चलता रहा परंतु दोनों की टक्कर बराबर की थी, कहीं कोई निर्णय नहीं निकल रहा था कि

विजेता कौन होगा? फिर काली ने ब्रह्मास्त्र चलाया परंतु वह भी शंखचूड़ को प्रणाम करके लुप्त हो गया। तब भगवान शिव और सभी देवता आश्चर्य करने कि ऐसा कैसे संभव हुआ कि ब्रह्मास्त्र विफल हो गया? तभी एक आकाशवाणी हुई - "हे देवताओं, शंखचूड़ भगवान श्री कृष्ण का ही अंश है। इसके शरीर पर भगवान श्री कृष्ण का दिया हुआ यह कवच विद्यमान है, उसकी पत्नी तुलसी अपने पतिव्रता के प्रभाव से इसकी रक्षा कर रही, इसलिए मृत्यु इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती है।"

आकाशवाणी सुनकर सभी देवता भगवान नारायण से मन ही मन प्रार्थना करने लगे - प्रभु, अब आप शीघ्र ही हमारे उद्धार का उपाय करो। देवताओं की प्रार्थना सुनते ही भगवान नारायण एक ब्राह्मण का वेश बनाकर युद्ध भूमि में शंखचूड़ के पास पहुंचे और कहने लगे -हे दानवीर, मैं भिक्षा लेने की आशा से तुम्हारे पास आया हूं। तुम पहले संकल्प करो कि जो वस्तु मैं मांगू, तुम बिना संकोच किये मुझे वह वस्तु दान कर दोगे।

शंखचूड़ -हे ब्राह्मण, तुम्हारी जो अभिलासा हो मांग लो, मैं निसंकोच में पूरी करूंगा।

ब्राह्मण - हे दानवीर, तुम मुझे अपना यह कवच उतार कर दान कर दो।

शंखचूड़ ने बिना देर किये प्रसन्नता से कवच उतर कर ब्राह्मण के वेश में श्री हरि को दान कर दिया। कवच लेकर

श्री हरि युद्ध भूमि से चले गए। फिर श्री हरि ने शंखचूड़ का ही रूप बना लिया और उसके महल में उसकी पत्नी तुलसी के पास पहुँच गए। तुलसी ने सोचा कि मेरे पति की युद्ध में विजय हो गई है, इसलिए वे घर वापस आ गए हैं। तुलसी ने अपने पति को समीप आते देखा तो उन्हें स्पर्श किया और उनके साथ हास-विलास करने लगी, इससे तुलसी का पति धर्म नष्ट हो गया। तुलसी का पति धर्म नष्ट होते ही युद्ध करते हुए असली शंखचूड़ का तेज क्षीण हो गया। ठीक उसी समय भगवान शिव ने शंखचूड़ पर श्री हरि का दिया हुआ वह त्रिशूल चला दिया।

शंखचूड़ इतना बुद्धिमान था कि अपनी तरफ आता त्रिशूल देखकर वह सारा रहस्य समझ गया कि अब उसका अंत समय आ गया है। वह रथ पर ही भक्तिपूर्वक योगासन लगाकर बेठ गया और भगवान श्री कृष्ण के चरणों का ध्यान करने लगा। त्रिशूल जो उसके विनाश के लिए आया था, कुछ समय तक शंखचूड़ की परिक्रमा करने लगा और अंत में शंखचूड़ के ऊपर जा गिरा। उसके गिरते ही शंखचूड़ रथ सहित जलकर भस्म हो गया।

दानव शरीर के नष्ट होते ही उस दिव्यआत्मा को भगवान श्री कृष्ण के जैसा ही दिव्य गोप रूप प्राप्त हुआ। उसी समय गोलोक से मणियों से जगमगाता हुआ एक विमान वहां

आया जिसमें बैठकर कर वह गोप गोलोक की तरफ चला गया। उसकी मुक्ति हो गयी।

शंखचूड़ के मारे जाने पर भगवान शंकर और सभी गण शिवलोक को चले गए। देवताओं को बड़ा हर्ष हुआ, उन्हें उनका खोया हुआ स्वर्ग और राज्य पुनः मिल गया।

देवी तुलसी ने जैसे ही शंखचूड़ का वेश बनाए हुए श्री हरि को स्पर्श किया, उसे आभास हो गया कि यह मेरे पति नहीं है। तुलसी ने क्रोधित होते हए पूछा - बताओ तुम कौन हो? तुमने कपटपूर्वक मेरा सतीत्व नष्ट कर दिया, इसलिए मैं तुम्हें श्राप दे रही हूं।

तुलसी के वचन सुनकर श्री हरि अपने वास्तविक नारायण स्वरूप में प्रकट हो गए। देवी तुलसी ने अपने सामने साक्षात् भगवान नारायण को देखकर अनुमान लगा लिया कि उनके पति का निधन हो गया है। ऐसा अनुमान करके एक बार तुलसी मूर्छित हो गई, फिर चेतना पाकर विलाप करने लगी, और भगवान को कहने लगी - हे नाथ, आपका हृदय तो पत्थर के समान है, आपमें तनिक भी दया नहीं है, आपने छलपूर्वक मेरा सती धर्म नष्ट कर दिया और मेरे स्वामी को मार डाला। आप पत्थर के समान निर्दयी बन गए इसलिए मेरा श्राप है कि आप पत्थर होकर ही पृथ्वी पर रहेंगे। इस प्रकार तुलसी शोक करती हुई बार-बार विलाप करने लगी।

तब भगवान श्री हरि तुलसी को समझते हुए कहने लगे - हे देवी तुलसी, तुम शोक मत करो। शंखचूड़ मेरा ही अंश था। वह दानव देह से मुक्त होकर दिव्य देह प्राप्त कर मेरे ही लोक में गया है। तुमने भी मेरी प्राप्ति के लिए बहुत कठोर तपस्या की है, इसलिए अब मैं तुम्हारी तपस्या का फल देना चाहता हूं। तुम इस मनुष्य शरीर का त्याग करके दिव्य देह धारण करके मेरे साथ आनंद से रहोगी। तुम्हारा यह शरीर नदी के रूप में परिणित हो जाएगा और भारतवर्ष में गंडकी नदी के नाम से विख्यात होगा। यह पवित्र नदी सभी मनुष्य को उत्तम पुण्य देने वाली बनेगी।

तुम्हारे केश से पृथ्वी पर पवित्र वृक्ष उत्पन्न होंगे। और वही वृक्ष तुलसी के नाम से प्रसिद्ध होंगे। तीनों लोकों में जितने भी पत्र-पुष्प है उन सब में तुलसी प्रधान मानी जाएगी। जहां तुलसी की पौधा होगा वहां समस्त देवताओं का निवास होगा। तुलसी पत्र के जल से अभिषेक करने पर संपूर्ण तीर्थों में स्नान करने का पुण्य फल प्राप्त होगा। हजारों घड़े अमृत के नहलाने पर भी भगवान श्री हरि को उतनी तृप्ति नहीं होगी जितनी तुलसी का एक पत्ता चढ़ाने से भगवान को प्राप्त होगी हे। हे देवी तुलसी पत्र के दान से दस हजार गोदान का फल प्राप्त होगा, मृत्यु के समय मुख में तुलसी का पत्र का जल का लगाने से वह संपूर्ण पापों से मुक्त होकर भगवान विष्णु के

लोक में रहेगा। श्राद्ध, व्रत, दान, प्रतिष्ठा, देवार्चन सबके लिए तुलसी पत्र होने पर ही पूर्ण शुद्ध माना जाएगा। तुम गोलोक धाम में तुलसी की अधिष्ठात्री देवी बनाकर मेरे कृष्ण स्वरूप के साथ निरंतर विहार करोगी।

सभी बच्चे जोर से बोलेंगे - सतगुरु देव भगवान की जय, तुलसी मैया कि जय।।। ।

4. श्लोक :-

तुलसी – नामाष्टक

वृन्दां वृन्दावनीं विश्वपावनी विश्वपूजिताम् ।
पुष्पसारां नन्दिनी च तुलसी कृष्णजीवनीम् ।।
एतन्नामाष्टकं चैतत्स्तोत्रं नामार्थसंयुतम् ।
य: पठेत्तां च संपूज्य सोऽश्वमेधफलं लभेत् ।।

भगवान नारायण देवर्षि नारदजी से कहते हैं : "वृन्दा, वृन्दावनी, विश्वपावनी, विश्वपूजिता, पुष्पसारा, नंदिनी, तुलसी और कृष्णजीवनी – ये तुलसी देवी के आठ नाम हैं । यह सार्थक नामावली स्तोत्र के रूप में परिणत है ।

जो पुरुष तुलसी की पूजा करके इस नामाष्टक का पाठ करता है, उसे अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है ।

ॐ श्री तुलस्यै नमः, ॐ श्री वृन्दाये नमः, ॐ श्री हरिवल्ल्माये नमः ।

5. ज्ञान का चुटकुला

टीचर - तुम देर से क्यों आए?

बच्चा - सड़क पर लगे बोर्ड के कारण।

टीचर - कैसे बोर्ड के कारण?

बच्चा - जिस पर लिखा है, 'आगे स्कूल है, कृपया धीरे चलें'...!!!

सीख : व्यवहारकुशल बनना चाहिए । हर परिस्थिति में अपनी सामान्य बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए ।

6. संस्कृति सुवास

पूज्य बापूजी द्वारा प्रेरित तुलसी पूजन की विश्व व्यापकता

पूज्य बापू जी द्वारा चलाया गया यह लोकहितकारी अभियान खूब व्यापक हो और समस्त विश्वमानव इससे लाभान्वित हो इस उद्देश्य से आप और हम सब मिलकर यह प्रयास करें कि 25 दिसम्बर से पहले तुलसी का पौधा हर घर में पहुँचे, ताकि सबको तुलसी पूजन से स्वास्थ्य और पुण्य का लाभ का लाभ मिल सकें। दैवी कार्य मे भागीदार होने के इस सुनहरे अभियान का हम सब हिस्सा बने, दूसरों को तुलसी का महत्व बताएं। अपने घर में, आस पड़ोस में अधिक-से-अधिक संख्या में तुलसी के पौधे लगाना-लगवाना मानो हजारों-लाखों रूपयों का स्वास्थ्य खर्च बचाना है, पर्यावरण-रक्षा करना है।

7. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की । आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है ।

प्रश्न है- "तुलसी पत्र कब नहीँ तोड़ना चाहिए?" विकल्प है-

(A) पूर्णिमा के दिन

(B) अमावस्या के दिन

(C) एकादशी के दिन

(D) तीनों सही

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

8. क्या करें क्या नहीं ?

तुलसी विशेष

- श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वृन्दावन्यै स्वाहा। इस मंत्र के द्वारा विधिसहित तुलसी का पूजन करना चाहिए।

- सोमवती अमावस्या को तुलसी की 108 परिक्रमा करना चाहिए, इससे से दरिद्रता मिटती है।
- तुलसी के पौधे के निकट बैठकर प्राणायाम करना चाहिए। इसकी वायु शरीर में प्रविष्ट होकर कीटाणुओं का नाश करती है
- अपने घर से दक्षिण की ओर तुलसी-वृक्ष का रोपण नहीं करना चाहिए।
- तुलसी पत्ते से टपकता हुआ जल आपने सिर पर धारण करना चाहिए। इससे गंगास्नान और 10 गोदान का फल प्राप्त होता है।
- बासी फूल और बासी जल पूजा के लिए वर्जित हैं परन्तु तुलसीदल और गंगाजल बासी होने पर भी वर्जित नहीं हैं।

9) भजन

अब हम सभी तुलसी माँ के लिए एक प्यारा सा भजन गायेंगे- तुलसी माँ, तुलसी माँ, प्यारी तुलसी माँ !!

https://youtu.be/ikQt_HB0dCs

10) गतिविधि

तुलसी पूजन

२५ दिसम्बर को सुबह स्नानादि के बाद घर के स्वच्छ स्थान पर तुलसी के गमले को जमीन से कुछ ऊँचे स्थान पर रखें । उसमें यह मंत्र बोलते हुए जल चढायें :

ऊँ श्री तुलस्यै विद्महे, विष्णुप्रियायै धीमहि, तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।

महाप्रसादजननी सर्वसौभाग्यवर्धिनी ।

आधि व्याधि हरा नित्यम,

तुलसी त्वां नमोऽस्तु ते ।।

फिर 'तुलस्यै नमः' मंत्र बोलते हुए तिलक करें, अक्षत (चावल) व पुष्प अर्पित करें तथा वस्त्र व कुछ प्रसाद चढायें । दीपक जलाकर आरती करें और तुलसीजी की ७, ११, २१, ५१ अथवा १०८ परिक्रमा करें । उस शुद्ध वातावरण में शांत हो के भगवत्प्रार्थना एवं भगवन्नाम या गुरुमंत्र का जप करें । तुलसी के पास बैठकर प्राणायाम करने से बल, बुद्धि और ओज की वृद्धि होती है ।

तुलसी – पत्ते डालकर प्रसाद वितरित करें । तुलसी के समीप रात्रि १२ बजे तक जागरण कर भजन, कीर्तन, सत्संग-श्रवण व

जप करके भगवद-विश्रांति पायें । तुलसी – नामाष्टक का पाठ भी पुण्यकारक है ।

तुलसी – पूजन अपने नजदीकी आश्रम या तुलसी वन में अथवा यथा – अनुकूल किसी भी पवित्र स्थान में कर सकते हैं ।

अब सभी बच्चे हाथ जोड़कर तुलसी माता का मानस पूजन करते हुए स्तुति करेंगे-

तुलसी – नामाष्टक

वृन्दां वृन्दावनीं विश्वपावनी विश्वपूजिताम् ।
पुष्पसारां नन्दिनी च तुलसी कृष्णजीवनीम् ।।
एतन्नामाष्टकं चैतत्स्तोत्रं नामार्थसंयुतम् ।
य: पठेत्तां च संपूज्य सोऽश्वमेधफलं लभेत् ।।

भगवान नारायण देवर्षि नारदजी से कहते हैं : "वृन्दा, वृन्दावनी, विश्वपावनी, विश्वपूजिता, पुष्पसारा, नंदिनी, तुलसी और कृष्णजीवनी – ये तुलसी देवी के आठ नाम हैं । यह सार्थक नामावली स्तोत्र के रूप में परिणत है ।

जो पुरुष तुलसी की पूजा करके इस नामाष्टक का पाठ करता है, उसे अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है ।

ॐ श्री तुलस्यै नमः, ॐ श्री वृन्दाये नमः, ॐ श्री हरिवल्ल्माये नमः

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की कुछ पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bl57Gh3T4ps

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग में सुनेंगे-

तुलसी महिमा

https://youtu.be/wRkDf__iVSk

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- आज की तुलसी की कथा किस पुराण में से है?
- गोपी तुलसी को श्राप क्यों मिला?

- भगवांन कृष्ण ने गोलोक में गोपी तुसली को क्या वरदान दिया?
- तुलसी का दर्शन और स्पर्श करने से क्या लाभ होता है?
- तुलसी का प्राकट्य कैसे हुआ?
- तुलसी की परिक्रमा करने से क्या लाभ होता है?
- आज के सत्संग से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

14. पूर्णाहूति

दीपज्योति एवं आरती

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृतं गमय ॥
ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो ! एक नए ज्ञानवर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ !!!

- **ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है ।**

उत्तर: [डी] तीनों सही

विशेष :- अमावस्या के दिन तो ना केवल तुलसी बल्कि किसी भी पेड़ के पत्ते तोड़ना वर्जित है।

चौथा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों !! बच्चों, पाश्चात्य संस्कृति से विपरीत २५ दिसंबर से १ जनवरी तक का सप्ताह अपनी भारतीय संस्कृति के अनुसार विश्वगुरु सप्ताह के रूप में मनाया जाता है । उसमें मुख्य रूप से तुलसी पूजन किया जाता है । तो आज का बाल संस्कार इसी विषय पर आधारित है ।

पिछले हप्ते की कहानी में हमने तुलसी की उत्पत्ति के बारे में जाना । अब उसके बाद शंख एवं शालिग्राम कि उत्पत्ति कैसे हुई - यह हम जानेंगे आज की कहानी में ! उसके बाद हम आपको बताएँगे भारतीय संस्कृति में तुलसी का वैज्ञानिक महत्व क्या है ? फिर स्वास्थ्य सुरक्षा में हम जानेंगे

कि तुलसी से स्वास्थ्य कि सुरक्षा कैसे कर सकते है ? इसके अलावा मजेदार ज्ञान का चुटकुला, भजन, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न, और अंत मे पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से सुनेंगे विशेष सत्संग ।

तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र - तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र !

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

कीर्तन- अब हम कीर्तन करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर नृत्य करेंगे ।

https://youtu lbe/7yMWmhcJXR

बच्चों, अब हम मंत्रोच्चारण और स्तुति करेंगे। सभी बच्चे अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे ।

ॐ गं गणपतये नमः, ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

अब सभी बच्चे करेंगे "ॐकार" गुंजन

https://youtu.be/IpaxAhv-9LM (2 मिनिट)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI (1 मिनिट चलायें।)

3. आओ सुनें कहानी

कहानी - शंख, शालिग्राम की उत्पत्ति (गतांक से आगे)

शंखचूड़ की बची हुई हड्डियों से ही शंख की उत्पत्ति हुई। वहीं शंख देवताओं की पूजा में पवित्र माना जाता है। शंख में रखे जल को पवित्र तीर्थ के जल के समान माना जाता है। जहां-जहां शंख की ध्वनि होती है वहां लक्ष्मी जी विराजमान रहती है।

हे तुलसी देवी, तुमने जो मुझे श्राप दिया है उसको सत्य करने के लिए मैं स्वयं भारतवर्ष में पत्थर के शालिग्राम बनकर सदा तुम्हारे पास रहूंगा। तुम्हारी देह से बनी पवित्र गण्डकी नदी के तट पर ही मेरा वास होगा और तुलसी वृक्ष के साथ ही मेरा विवाह होगा। जिस घर में शालिग्राम और तुलसी रहेंगे वहां साक्षात श्री हरी और लक्ष्मी जी निवास करेंगे। शालिग्राम की पूजा करने से ब्रह्महत्या आदि पाप भी दूर हो जाएंगे, उसके घर में अकाल मृत्यु नहीं होगी। व्रत, दान, प्रतिष्ठा, श्राद्ध आदि कार्य शालिग्राम को पास में रखकर करेंगे तो सर्वोत्तम लाभ प्रदान करने वाले होंगे। जो अपने ऊपर शालिग्राम का जल चिड़केगा उसे संपूर्ण तीर्थों में समान किया हुआ माना जाएगा। चारों वेदों को पढ़ने और तपस्या करने से जो पुण्य होगा वही पुन्य शालिग्राम शिला की पूजा से प्राप्त हो जावेगा। तुलसी और शालिग्राम का नित्य पूजन करने वाला व्यक्ति भगवान श्री हरि के पद का अधिकारी हो जाएगा। इस प्रकार देवी तुलसी से यह वचन कहकर भगवान श्री हरि मौन हो गए।

देवी तुलसी ने अपना मनुष्य शरीर त्याग दिया और दिव्य रूप से संपन्न हो भगवान श्री हरि के साथ लक्ष्मी की भांति शोभा पाने लगी। भगवान श्री हरि उन्हें साथ लेकर बैकुंठ पधार गए। प्रथ्वी पर तुलसी की देह से गण्डकी नदी का प्रवाह

निकला और उनके केश से तुलसी वृक्ष उत्पन्न हो गए। भगवान श्री हरि भी इस नदी के तट पर मनुष्यों के लिए पुण्यप्रद शालिग्राम शिला बन गए। इस प्रकार भारत में परम पावनी तुलसी, गण्डकी नदी और भगवान श्री हरी का शालिग्राम शिला के रूप में का प्राकट्य हुआ।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में वर्णित यह कथा स्वयम भगवान नारायण ने नारद जी से कही। इस कथा को पढने, सुनने और सुनाने से महान पुण्य और हरि भक्ति प्राप्त होती है।

सभी बच्चे जोर से बोलेंगे - सदगुरुदेव भगवान जी की जय ।

4. श्लोक :-

तुलसी को जल चढाने का मंत्र :

ऊँ श्री तुलस्यै विद्महे, विष्णुप्रियायै धीमहि, तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।

महाप्रसादजननी सर्वसौभाग्यवर्धिनी ।

आधि व्याधि हरा नित्यम, तुलसी त्वां नमोऽस्तु ते ।।

5. ज्ञान का चुटकुला

अकबर को मिली सीख

एक बार अकबर बीरबल कहीं टहलने जा रहे थे ! रास्ते में एक तुलसी का पौधा दिखा, मंत्री बीरबल ने तुलसी को प्रणाम किया !

अकबर ने कहा - ये तुम पौधे को क्यों प्रणाम कर रहे हो?

बीरबल - ये तुलसी है, यह हमारी माता है।

अकबर ने घमंड मे आकर तुलसी को उखाड़ कर फेंक दिया और बोला, कितनी मातायें हैं तुम हिन्दू लोगो की !

बीरबल ने उसका जबाब देने की एक तरकीब सूझी ! आगे एक बिच्छुपत्ती (खुजली वाला) झाड़ मिला । बीरबल उसे दंडवत प्रणाम कर कहा- "यह हमारे बाप हैं। "

अकबर ने पहले की तरह उस पौधे को भी जैसे ही उखाड़ने की कोशिश तो बिच्छुपत्ती पौधे के कण अकबर के दोनों हाथ और शरीर पर आ गिरे। इतने में अकबर को पूरे शरीर मे भयंकर खुजली होने लगी।

अकबर चिल्लाया - बीरबल, ये क्या हो गया !

बीरबल टोंट मारते हुए बोला - जहांपना, हमारी मायें बहुत दयालु होती है, लेकिन बाप बहुत कड़क होते हैं, वे बदतमीजी बर्दाश्त नहीं करते।

अकबर जहाँ भी हाथ लगता, खुजली होने लगती, वो खुजली के मारे बिलखने लगा और बोला: बीरबल, जल्दी कोई उपाय बतायो!

बीरबल फिर टोंट मारते हुए बोला - जहांपना, जब हमारे बाप नाराज होते हैं, तो हम लोग मां के पास ही जाते हैं, तो आपका इलाज भी मां के पास ही मिलेगा।

अकबर - बीरबल, जो भी करना है जल्दी करो।

बीरबल - लेकिन पहले आपको यह वचन देना पड़ेगा की आप हिंदू धर्म के प्रतीकों का अपमान नहीं करेंगे।

अकबर - मैं वचन देता हूं, जल्दी करो वरना ये खुजली मेरी जान लेगी।

बीरबल ने अकबर के पूरे शरीर पर गाय के गोबर से लेप कर दिया, और कहा देखिए ये हमारी गाय माता है।

अकबर - ठीक है, इससे खुजली से राहत मिल गई, लेकिन अब यह गोबर और इसकी बदबू का क्या?

बीरबल - इसके लिए आपको गंगा माता की शरण जाना पड़ेगा, आप बोलिए हर-हर गंगे और कूद जाइए !

अकबर गंगा में नहा कर बाहर निकलता है, और कहता है अब खुजली जलन तो नहीं हो रही है लेकिन शरीर की त्वचा अभी लाल है।

बीरबल- उसके लिए आपको वापस तुलसी माता की शरण जाना पड़ेगा।

फिर जो तुलसी अकबर ने उखाड़ी थी, उसी तुलसी के पत्तों का रस पीसकर बीरबल ने अकबर के सारे शरीर में लेप कर दिया, जिससे थोड़ी देर बाद उनके शरीर की त्वचा सामान्य हो गई। इस प्रकार अकबर को अच्छा सबक मिला और उस दिन से उसने हिन्दू धर्म के प्रतीकों का अपमान करना छोड़ दिया।

सीख : बच्चों, अपने सनातन हिन्दू धर्म के प्रतीकों का अपमान कभी नहीं करना चाहिए ना ही किसी और को करने देना चाहिए । धर्म की रक्षा अपना प्रथम कर्तव्य है ।

6. संस्कृति सुवास :-

तुलसी का वैज्ञानिक महत्व

बच्चों, वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र बसु ने क्रेस्कोग्रॉफ की खोज कर यह सिद्ध कर दिखाया कि वृक्षों में भी हमारी तरह चैतन्य सत्ता का वास होता है। तुलसी में विद्युतशक्ति अधिक होती है। इससे तुलसी के पौधे के चारों ओर की 200-200 मीटर तक की हवा स्वच्छ और शुद्ध रहती है।

फ्रेंच डॉक्टर विक्टर रेसीन ने कहा हैः "तुलसी एक अदभुत औषधि (Wonder Drug) है। इस पर किये गये प्रयोगों से यह सिद्ध हुआ है कि रक्तचाप, पाचनतंत्र तथा मानसिक रोगों में तुलसी अत्यंत लाभकारी है। इससे रक्तकणों की वृद्धि होती है। मलेरिया तथा अन्य प्रकार के बुखारों में तुलसी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है।"

आभामंडल नापने के यंत्र यूनिवर्सल स्कैनर द्वारा परीक्षण करने पर यह बात सामने आयी कि तुलसी के पौधे की 9 बार परिक्रमा करने पर उसके आभामंडल के प्रभाव क्षेत्र में 3 मीटर की आश्चर्यकारक बढ़ोतरी हो गयी। आभामंडल का दायरा

जितना अधिक होगा, व्यक्ति उतना ही अधिक कार्यक्षम, मानिस रूप से क्षमतावान व स्वस्थ होगा।

ग्रहण के समय खाद्य पदार्थों में तुलसी की पत्तियाँ रखने की परम्परा है। ऋषि जानते थे कि तुलसी में विद्युतशक्ति होने से वह ग्रहण के समय फैलने वाली सौरमंडल की विनाशकारी, हानिकारक किरणों का प्रभाव खाद्य पदार्थों पर नहीं होने देती। साथ ही तुलसी-पत्ते कीटाणुनाशक भी होते हैं। तुलसीपत्र में पीलापन लिए हुए हरे रंग का तेल होता है, जो उड़नशील होने से पत्तियों से बाहर निकलकर हवा में फैलता रहता है। यह तेल हवामान को कांति, ओज-तेज से भर देता है। तुलसी का स्पर्श करने वाली हवा जहाँ भी जाती है, वहाँ वह स्वास्थ्य के लिए लाभदायी है। तुलसी पत्ते ईथर नामक रसायन से युक्त होने से जीवाणुओं का नाश करते हैं और मच्छरों को भगाते हैं। तुलसी का पौधा ओजोन गैस छोड़ता है, जो विशेष स्फूर्तिप्रद है।

पूज्य बापू जी कहते हैं- वैज्ञानिक बोलते हैं उनका नजरिया बहुत छोटा है, तुलसी भगवान की प्रसादी है। हम लोगों का नजरिया केवल रोग मिटाना नहीं है बल्कि मन प्रसन्न

करना है, जन्म-मरण का रोग मिटाकर जीते जी भगवद् रस जगाना है।

7. स्वास्थ्य सुरक्षा :

तुलसी से स्वास्थ्य सुरक्षा

कैंसर के रोगी को 10 ग्राम तुलसी का रस तथा 10 ग्राम शहद मिलाकर सुबह दोपहर शाम देने से उसे राहत मिलती है। एक-एक घंटे के अंतर से दो-दो तुलसी के पत्ते भी मुँह में रखकर चूसते रहें।

जलने से फफोले और घाव हो जाता है तो तुलसी के रस व नारियल के तेल को उबालकर, ठण्डा होने पर जले भाग पर लगाने से लाभ होता है।

विद्युत के तार का स्पर्श हो जाने, या वर्षा ऋतु में बिजली गिरने के कारण यदि झटका लगा हो तो रोगी के चेहरे और माथे पर तुलसी का रस मलें, इससे रोगी की मूर्च्छा दूर हो जाती है।

तुलसी रक्त की कमी दूर करती है। इसके नियमित सेवन से हीमोग्लोबिन अत्यंत तेजी से बढ़ता है व दिनभर स्फूर्ति रहती है।

तुलसी गुर्दे की कार्यशक्ति बढ़ाती है। कोलेस्ट्रॉल को सामान्य बना देती है। हृदयरोगों में आश्चर्यजनक लाभ करती है। आँतों के रोगों के लिए तो यह रामबाण औषधि है।

सूखी खांसी में तुलसी की कोंपलें व अदरक समान मात्रा में लेकर पीसकर शहद के साथ चटाने से लाभ होता है। आधा चम्मच तुलसी रस में आधा चम्मच अदरक रस व 1 चम्मच शहद मिलाकर चाटने से खाँसी में लाभ होता है।

8. क्या करें, कैसे करें ?

तुलसीजी का सेवन :-

बच्चों, तुलसी सम्पूर्ण धरा के लिए वरदान है, यह मानव जीवन के लिए अमृत है। तुलसी आयु, आरोग्य, पुष्टि देती है। दर्शनमात्र से पाप समुदाय का नाश करती है। स्पर्श

करने मात्र से यह शरीर को पवित्र बनाती है और जल देकर प्रणाम करने से रोग निवृत्त करती है तथा नरकों से रक्षा करती है। इसके सेवन से स्मृति व रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ती है।

जिसके गले में तुलसी लकड़ी की माला हो या तुलसी का पौधा निकट हो तो उसे यमदूत नहीं छू सकते। तुलसी माला धारण करने से जीवन में ओज तेज बना रहता है।

पद्म पुराण में लिखा है कि संसार भर के फूलों और पत्तों से जितने भी पदार्थ या दवाईयाँ बनती हैं, उनसे जितना आरोग्य मिलता है, उतना ही आरोग्य तुलसी के आधे पत्ते से मिल जाता है।

9. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की ।

आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है।

प्रश्न है- “२५ दिसंबर से १ जनवरी तक के सप्ताह को कौनसे रूप में मनाना चाहिए ?”

a. न्यू यर वीक

b. विश्वगुरु भारत सप्ताह

c. क्रिसमस वीक d. पार्टी वीक

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा।

10. भजन

अब हम गाएंगे एक प्यारा भजन :-

तेरी महिमा है अपरमपार !!

https://youtu.be/zMjWVI9_7DY

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bl57Gh3T4ps

(कुछ पंक्तियों का पाठ करवाएं।)

12. सत्संग श्रवण

सत्संग - अब हम पूज्य बापूजी के श्रीमुख से सत्संग में सुनेंगे-

ओज तेज एवं रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाने का अदभूद सामर्थ्य !

https://youtu.be/paHHK5gPKj8

13. प्रश्नोत्तरी

बच्चों, अब तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए ।

- शंख की उत्पत्ति कैसे हुई ?
- शालिग्राम की उत्पत्ति कैसे हुई ?
- तुलसी का सेवन किस किस प्रकार करना चाहिए ?
- तुलसी कि माला धारण करने से क्या-क्या फायदे होते है ?
- तुलसी की आभा कितने मीटर तक होती है ?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- आज के सत्संग से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

14. पूर्णाहूति

<u>आरती</u> - सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चों, एक नए ज्ञान वर्धक विषय के साथ । तब तक के लिए हरि ॐ !!!

<u>दीपज्योति एवं आरती</u> -

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

प्रतियोगिता का उत्तर - ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है - [B] विश्वगुरु भारत सप्ताह

****